पुनः पुनर्नमस्तेऽस्तु

आचार्य डॉ. नारायणशास्त्री काङ्कर विद्यालङ्कार
(महामहिम-राष्ट्रपतिसम्मानित)

गुरुदेव! नमस्तुभ्यं, वारं वारं नमो नमः।
अज्ञान-तिमिरं हंसि, ज्ञान-दीपेन भास्वता ।।1।।

हे गुरुदेव! आपको नमन हो, बारं बार नमन हो, नमन हो। आप देदीप्यमान ज्ञानरूपी दीपक से अज्ञानरूपी अन्धकार को मार देते हैं।

त्वदन्यः कः कृपा-सिन्धुर्, यदीशमपि दर्शयेत्।
त्वद्-ऋणं शोधयितुं नो, शक्यं कदापि किञ्चन।।2।।

आपसे दूसरा अन्य कौन कृपासिन्धु है? जो ईश्वर को भी दिखा दे। आपका ऋण कभी कुछ भी उतारा नहीं जा सकता।

अनन्तो महिमा तेऽस्ति, वर्णयितुं न शक्यते।
कृपां त्वं यदि कुर्या न, किं भवेज्जगतः स्थितिः।।3।।

आपकी महिमा अनन्त है, वर्णित नहीं की जा सकती। आप यदि कृपा नहीं करें, तो क्या जगत् की स्थिति सम्भव है?

मतिं शोधय सर्वेषां, सदा कुपथ-गामिनाम्।
एत एव सुखं शान्तिं, हरन्ति तस्करा इव।।4।।

सदा सभी कुपथगामियों की बुद्धि को आप शुद्ध कर दीजिये। ये तस्करों की तरह सुख-शान्ति का अपहरण करते हैं।

पर-पीडाभिज्ञेनैव, जानन्ति स्वार्थ-साधकाः।
स्वयमपि सुखं शान्तिं, चिरं नानुभवन्ति हि।।5।।

ये स्वार्थ को साधने वाले लोग परायी पीड़ा को नहीं जानते हैं। स्वयं भी चिरकाल तक सुख-शान्ति को अनुभूत नहीं करते।

निरङ्कुशा इमे लोका, भ्रष्टाचारं प्रकुर्वते।
त्वमेवैभ्यो गुरो! देहि, सद्बुद्धिं सुख-शान्तिदाम्।।6।।

निरङ्कुश बने हुए ये लोग भ्रष्टाचार प्रकृष्टरूप से करते हैं। हे गुरुदेव ! आप ही इनको सुख-शान्ति देने वाली सद्बुद्धि दे दीजिये।

संस्कृतं नैव शिक्षन्ते, स्वजनान् शिक्षयन्ति न।
कथं प्रादुर्भवेदेषु, स्पृह्या सत्पथ-गामिता?।।7।।

ये संस्कृत नहीं सीखते और स्वजनों को भी नहीं सिखाते। इनमें वांछित सत्पथ-गामिता कैसे प्रादुर्भूत हो?

संस्कृतस्य परित्यागात् कुतः सद्-वृत्त-शिक्षणम्?।
सद्-वृत्तं च विना सौख्यं, शान्तिश्चापि न लभ्यते।।8।।

संस्कृत का परित्याग कर देने से सदाचार की शिक्षा कहाँ से मिलेगी? और सदाचार के बिना सुख और शान्ति भी नहीं प्राप्त की जाती ।

संस्कृतस्य परित्यागात्, संस्कृतिर्नश्यति ध्रुवम्।
संस्कृतौ च विनष्टायां, मनुष्यो दानवायते।।9।।

संस्कृत का परित्याग करने से संस्कृति निश्चित रूप से नष्ट हो जाती है और संस्कृति के विनष्ट हो जाने पर मनुष्य दानवों जैसा व्यवहार करने लगता है।

शिक्षित-संस्कृतो जनो, भ्रष्टाचारं करोति कदापि नहि।
देशद्रोहोऽमुष्मिन्, न मिलति कीदृशोऽपि विनिन्द्यः।।10।।

संस्कृत की शिक्षा प्राप्त किया व्यक्ति कभी भी भ्रष्टाचार नहीं करता है। विशेष रूप से निन्दनीय कैसा भी देशद्रोह नहीं मिलता है।

शिक्षित-संस्कृतो जनो, न बलात्कारी न चातङ्ककारी।
नापि तस्करो न कार्य,-चौरो वञ्चको च न क्वचन भवसि।।11।।

-संस्कृत सीखा हुआ व्यक्ति न बलात्कारी होता है और न आतङ्ककारी ही। यह तस्कर, कामचोर या वञ्चक अर्थात् ठगने वाला भी नहीं होता है।

शिक्षित-संस्कृत-जनि तु, दुराचारो न दृष्टो द्रक्ष्यते च न।
दुराचारापराधैस्तु, शिक्षित-संस्कृतो न हि दण्डितः क्वापि।।12।।

संस्कृत सीखे हुए व्यक्ति में तो दुराचार / भ्रष्टाचार नहीं देखा गया है और भविष्य में भी नहीं देखा जायेगा। दुराचार / भ्रष्टाचार को अपराधों के कारण तो संस्कृत की शिक्षा प्राप्त किया हुआ व्यक्ति कहीं भी दण्डित नहीं किया गया है।

संस्कृतो न सामान्यः, शिष्टो भवति सोऽन्यतः।
विद्या-विनय-सम्पन्नः, सदाचारी सदा हि सः।।13।।

संस्कृत का जानकार पढ़ा लिखा व्यक्ति साधारण नहीं होता। वह तो दूसरों की अपेक्षा शिष्ट/विशिष्ट होता है। इसका ही नहीं, विद्या और विनय से सम्पन्न वह सदा ही सदाचारी होता है।

आत्मानं शिक्षितम्मन्या, दुराचरन्ति सर्वदा।
शासनस्यापि नैतेषु भयं किमपि दृश्यते।।14।।

अपने आपको शिक्षित मानने वाले ही सदा दुराचार किया करते हैं। इनमें शासन का भी कोई भी भय नहीं दिखायी देता।

आत्मवत् सर्वभूतेषु किमेते वर्त्तयन्ति भोः।
निर्दयास्तानि नित्यं हि, पीडयन्ति निरङ्कुशाः।।15।।

अजी! क्या ये अपने समान ही सभी प्राणियों में बर्ताव करते हैं? निर्दय और निरङ्कुश बने हुए ये तो उनको नित्य पीड़ित ही करते हैं।

दुराचारा इदानीं ये, विविधाः प्रसृता भुवि।

संस्कृतशिक्षणाभावः, किं नात्र मुख्य-कारणम्?।।16।।

इस समय भूमण्डल पर जो विविध दुराचार फैले हुए हैं, क्या इनमें संस्कृत शिक्षा का अभाव मुख्य कारण नहीं है?

सर्वतन्त्र-स्वतन्त्रोऽसि, सर्व-शक्तिस्त्वयि स्थिता।

गुरुदेव! त्वमेवाशु सर्वान् सत्पथमानय।।17।।

हे गुरुदेव ! आप सर्वतन्त्र-स्वतन्त्र हो, आप में सब शक्ति स्थित है। कृपया आप ही इन सब को शीघ्र सत्पथ पर पर लाइये।

अशक्यं गुरुदेवाय, नैवासि तेऽग्र किञ्चन।

यदिच्छेर्मनसा तत्तु, त्वरितं किं न सिद्ध्यतु?।।18।।

आप गुरुदेव के लिये यहाँ कुछ भी अशक्य नहीं है। आप जो मन से चाहें - क्या वह त्वरित सिद्ध नहीं हो जाये?

विश्वगुरुरसि त्वं तु, विश्वे भ्रमसि सूर्यवत्।

शासकान् शासितान् सर्वान्, सद्यः सत्पथमानय।।19।।

आप तो विश्वगुरु हो और विश्व में सूर्य की भाँति भ्रमण करते हो। कृपया आप तत्काल सभी शासकों और शासितों को सत्पथ पर ले आइये।

पुनः पुनर्नमस्तेऽस्तु, सद्यःपूरय प्रार्थनाम्।

विश्वस्याप्यस्य विश्वस्य, सर्वं शमस्तु सर्वदा।।20।।

हे गुरुदेव ! आपको पुनः पुनः नमन हो। आप कृपया इस मेरी प्रार्थना को तत्काल पूर्ण कर दीजिये। इस सम्पूर्ण विश्व का सर्वदा सब प्रकार का कल्याण हो।

सन्मार्गस्थो हि सर्वोऽत्र, स्वाभीष्टं लभतां गुरो!

यतः स्वां त्वं दयादृष्टिं, कदापि माऽपसारय।।21।।

हे गुरुदेव ! यहाँ सभी लोग सन्मार्ग में स्थित हुए अपना अभीष्ट प्राप्त करें और आप कभी अपनी दयादृष्टि मुझसे नहीं हटाना।

- युग्मकम्-

ऊनत्रिंशे केसर-विहारे, विद्या-वैभव-भवनेऽधुना।
जगतत्पुराख्य-जयपुरे, वासी त्वदीय-शुभाशी-राशि-लिप्सुः।।22।।

गुरुपूर्णिमाऽवसरेऽद्य, सर्वथा गुरो! हर्ष-निर्भर-मानसः।
स्वाशयमिमं विनिवेश्य, विरमति नमन्निह नारायण काङ्करः।।23।।

-विद्या-वैभव-भवन, 29, केसर-विहार, जगत्पुरा, जयपुर-302017 (राज.) में निवासकर्त्ता आपकी शुभाशीराशि- प्राप्ति का इच्छुक गुरुपूर्णिमा के अवसर पर आज हे गुरुदेव ! सर्वथा हर्ष से भरपूर मानस वाला बना हुआ यह नारायण काङ्कर अपने इस आशय को विशेषरूप से आपको निवेदित करके नमन करता हुआ अब यहीं विराम ग्रहण करता है।

कविवाणी

श्लिष्टा क्रिया कस्यचिदात्मसंस्था, सङ्क्रान्तिरन्यस्य विशेषयुक्ता।
यस्योभयं साधु स शिक्षकाणाम्, धुरि प्रतिष्ठापयितव्य एव।।

किसी की ज्ञानपूर्ण क्रिया अपने तक ही सीमित रहती है और किसी दूसरे की क्रिया अपने ज्ञान को दूसरे तक पहुँचाने में समर्थ होती है। जो कला का पर्याप्त ज्ञान भी रखता है और उसको दूसरों तक पहुँचा भी सकता है, वही शिक्षकों में ऊँचे पद पर स्थापित करने के योग्य होता है।

Some kind of people have sufficient knowledge and can show that practically also which remains limited upto them. The other kind of people have less knowledge but they can transfer their knowledge to others.

The person who possesses sufficient knowledge and can transfer it to others is apt for the highest post of teachers; he is the best teacher.